# आदिवासी धर्म–संस्कृति के सरंक्षक गोंड कलाकार

**श्रीमती अपेक्षा चौधरी**
**शोध छात्रा**
**आर0जी0 (पी0जी0)**
**कॉलिज, मेरठ।**
*ईमेलः apekshapanwar13@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

**श्रीमती अपेक्षा चौधरी**

*''आदिवासी धर्म–संस्कृति के सरंक्षक गोंड कलाकार'*

Artistic Narration 2020,
Vol. XI, No. II,
Article No. 22 pp. 135-143

https://anubooks.com/artistic-narration-no-xi-no-2-july-dec-2020/

***सारांश***

*भारत वह भूमि है जहाँ चौसठ कलाओं का उद्भव हुआ। यहाँ की लोककलाओं में संस्कृति एवं परम्पराओं का विस्तृत रूप दिखाई देता है जो भारतीय कला का मूल है, उसकी आत्मा है। भारत के हर क्षेत्र में लोक कलाओं का विस्तार देखा जा सकता है। ये लोककलाएँ जन–जन के घर आंगन से उठकर विश्वपटल पर भारतीयता की अमिट छाप छोड़े हुए है। ऐसी ही लोक कला मध्यप्रदेश के छोटे से गांव पाटनगढ़ में विकसित हो अपनी संस्कृति एवं मूल्यों का प्रसार देश–विदेश के विभिन्न भागों में कर रही है। वह गोंड कला किसी परिचय की मोहताज नही है। यह कला गोंड परम्पराओं, संस्कारों, रीति–रिवाज की अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम के रूप में उभर कर आयी है। गोंड आदिवासी समाज के संस्कारों का जीवन्त रूप हमारे समक्ष ये कलाकृतियाँ प्रस्तुत करती है। इस कला को सैंकड़ों कलाकार ने एक धरोहर के रूप में संजोया है। जिनमें जनगण सिंह श्याम, वेकैंट श्याम, रामसिंह उर्वीती एवं दुर्गाबाई का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।*

***मुख्य शब्द –*** *परम्परा, सरंक्षक, गोंड, देवलोक, बड़ा देव।*

## प्रस्तावना

मनुष्य की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि उसका धर्म हो, संस्कृति हो या मान्याताएँ वह उन्हें सदैव जीवित देखना चाहता है। कला एक ऐसा माध्यम है जिसमें वह धर्म, संस्कृति और अपने दैनिक जीवन एवं उससे जुड़े समस्त पक्षों को सम्मिलित कर लेता है। वह कला चित्रकला के रूप में हो, मूर्तिकला के रूप में हो या अन्य किसी भी कला के रूप में हो। उसका तात्पर्य ही कलाकार की स्वयं की भावनाओं, उसके पर्यावरण, संस्कृति अर्थात् उसके सम्पूर्ण परिवेश से जुड़ी बातों, दिन–प्रतिदिन की घटनाओं तथा उनका कलाकार के ऊपर प्रभाव है। कला, कलाकार और समाज एवं उसकी परम्पराओं के मध्य एक सूक्ष्म तारतम्य स्थापित करना इसका प्रमुख ध्येय है। हम इन तथ्यों को अपनाकर अनेक बिन्दुओं को भी जोड़ सकते हैं। तथा इन स्वयं के अनुभवों और उनसे उपजी अभिव्यक्तियों के द्वारा कला अधिक सोद्देश्य होती है। फिर भी अपनी–अपनी व्यवस्था के अन्तर्गत परम्परागत चित्रकारों ने स्वयं को बड़े समृद्ध रूप में अभिव्यक्त किया है। दूसरे शब्दों में परम्पराएँ कलाकार की अभिव्यक्ति में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न नहीं करती अपितु उन्हें एक उत्तेजना प्रदान करती हैं।[1]

## धर्मः–दुर्खिम के शब्दों में

''धर्म पवित्र वस्तुओं से सम्बंधित विश्वासों और आचरणों की वह समग्र व्यवस्था है जो इन पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदाय में संयुक्त करती है।''

व्यक्ति विशेष के समूह की आस्था विचार विश्वास एवं धारणा धर्म का रूप ग्रहण कर लेती है। ये धारणा एवं विश्वास उसके व्यवहार एवं जीवन का अभिन्न अंग बन जाते है जिन्हें मनुष्य जीवन के हर पक्ष के साथ जोड़कर देखता है। ये आस्था, विश्वास, परम्पराएं मानव जीवन को सन्तुष्टि प्रदान करती है, उसके हर क्षण को नियन्त्रित करती है और नैतिकता को धारण कर जीवन के संचालन का मार्ग प्रशस्त करती है। धर्म भारतीय संस्कृति के प्राण है। धर्म व्यक्ति या समूह व्यक्तिगत एवं सामुहिक प्रत्येक पक्ष पर अपना प्रभाव डालता है। कला भी इससे अछूती नही है अपितु कला पूर्णतः धर्म से प्रभावित दिखाई देती है पुरा काल से ही हम देखते है तो पाते है कि आदिकाल से आधुनिक काल के मानव तक वह कहीं न कहीं किसी न किसी रूप में धर्म से स्वयं को प्रभावित पाता है। आदिकाल के प्राप्त अवशेषों से हमें ज्ञात होता है कि धार्मिक प्रतीक के प्रयोग एवं चित्रों में विभिन्न क्रियाकलापों का चित्रण दिखाई देता है। चित्र धर्म और धार्मिक परम्पराओं को तुलिका द्वारा रूप प्रदान कर मन के रूपाकारों को जीवन्त बना देते है। विभिन्न लोक कलाओं में धार्मिक प्रवृत्ति का सर्वोच्च स्थान दिया गया है। ये लोक चितेरे धार्मिक आस्थाओं, विश्वासों व अनुष्ठानों को रूपों व रंगों में सजाकर अपनी परम्पराओं को सहेजे हुए है।

## संस्कृति

संस्कारों का परिमार्जन कर उनका नवीनीकरण अर्थात् ऐसी क्रिया जो व्यक्ति में पवित्रता का संचारण करें वह संस्कृति है। संस्कृति अंगेजी शब्द कल्चर का पर्याय है। कल्चर शब्द की उत्पत्ति वैदिक शब्द कृष्टि से हुई है। मनुष्य के संस्कार उसकी समृद्धि का खाका तैयार करते है जो जीवन का आधार बनते है। उसी प्रकार मानव मन में संस्कारों द्वारा विकास की भूमिका तैयार की जाती है। मानव का मन जितना बुराईयों और कुकृत्यों रहित और शुद्ध है, वह उतना ही अधिक संस्कारवान कहा जाता है।[2] संस्कृति मानवता का मेरू दण्ड है। कला संस्कृति की संरक्षक है जो सदियों से अनेक संस्कृतियों

को अपने अन्दर समाये हुए है। कला और संस्कृति एक सिक्के के दो पहलू के समान है अर्थात् एक दूसरे के सहचरी है। कला और संस्कृति को भिन्न नही किया जा सकता है अपितु ये एक–दूसरे का अभिन्न अंग है।

**आदिवासी धर्म व संस्कृति से प्रभावित गोंड कला**

गोंड कलाकृतियों का अपना निजी आकर्षण है जो कला मर्मज्ञों को विचार करने हेतु बाध्य करता है। कलाकारों द्वारा गढ़े गये ये रूपाकार काल्पनिक रूपों, प्रतीकात्मक आकारों के माध्यम से सम्पर्क स्थापित करते हैं। गोंड कलाकारों द्वारा जिस सूक्ष्मता, गंभीरता एवं विचारवादी प्रवृत्ति से आकृतियों को उकेरा गया है वह अत्यंत ही प्रभावशाली बन पड़ा है। गोंड लोगों ने अपनी सभ्यता, संस्कृति, धार्मिक रीति–रिवाज को विभिन्न कलाओं के माध्यम से एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तान्तरित किया। संगीत, गीत (लोक मल्हार), कविता और चित्रों के द्वारा अपनी आत्मानुभूतियों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति की। जो भाव उनके अन्दर प्रस्फुटित हुआ उसे रेखाओं, रंगों, रूपों एवं शब्दों के माध्यम से गढ़ने का प्रयास किया। अपनी सृजन शक्ति के द्वारा जीवन के विभिन्न पहलुओं का एक दर्पण रूपी यथार्थ प्रस्तुत किया। इन कलाकृतियों में कहीं न कहीं उन कलाकारों की भावनाएं, कल्पनाएं समाज को संदेश देती प्रतीत हुईं।

गोंड चित्रकार न केवल एक चित्र या आकृति का निर्माण करते हैं अपितु अपनी लोक एवं दन्त कथाओं का सम्पूर्ण भाग उसमें चित्रित करते हैं। इन चित्रों में प्रकृति के बडे ही भावात्मक एंव काल्पनिक स्वरूप को दर्शाया गया है जो इनके प्रकृति एवं धार्मिक आस्थाओं के साथ गहरे जुड़ाव को दिखाता है। पेड–पौधों, जीव–जन्तुओं, पक्षियों आदि प्रकृति द्वारा सृजित रूपों को अपनी मनोसृष्टि के द्वारा एक नवीन चेतना प्रदान की। इन कलाकृतियों में मुख्य रूप से नैसर्गिक सौन्दर्य को धार्मिक पुट के साथ कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। प्रकृति के सृजन, रहस्यों एवं ताकतों को तूलिका के द्वारा मूर्त रूप प्रदान किया गया है। प्रकृति के साथ–साथ धार्मिक विश्वास, अनुष्ठान, देवी–देवताओं, दिपावली, करवाचौथ, अहोई अष्टमी, नाग पंचमी तथा अपने स्थानीय देवों जैसे– बादा देव, फुलवारी देवी, माराही देवी, इत्यादि और जानवरों के चित्रों को मुख्य रूप से चित्रित किया जाता रहा है।

स्थानीय देवी–देवताओं को सर्वाधिक रूप में चित्रित किया गया है जिनमें बड़ा देव (सृजनहार), पंडा–पंडिन (रोग निवारक देवता), दुल्हा–दुल्ही देव (विवाह बंधन में बांधने वाला देव), नारायण देव (सूर्य) और भीवासू देव, चन्द्रमा आदि देवों का चित्रण बहुतायत से किया जाता रहा है। अन्य स्थानीय देवों का प्रचलन भी गोंड आदिवासियों में रहा है। जिनको बडे ही सौन्दर्यपूर्ण ढंग से चित्रपटल पर उतारा गया है। देवी–देवताओं के जन्म एवं मृत्यु, पुनर्जन्म का चित्रण भी किया गया है जो गोंड शैली के चित्रों की एक महत्वपूर्ण विशेषता रही है। अच्छे और बुरे कर्मों का चित्रण भी दिखाई देता है जो शुद्धता एवं अशुद्धता की भावना को प्रकट करता है। गोंड चितेरों द्वारा निर्मित ये कलाकृतियाँ मानवीय संवेदनाओं को दिखाती प्रतीत होती हैं।[3]

उत्सवों के अवसर पर ये आकृतियाँ गोंड कलाकारों द्वारा स्वयं निर्मित भित्ति एवं धरातल पर चित्रित की जाती थी। गोंड कला एक रेखा प्रधान कला षैली है जिसमें सपाट या समतल रंग पर रेखाओं और बिन्दुओं द्वारा सम्पूर्ण कलाकृतियों को चित्रित किया जाता है। चटख रंगों एवं रंगतों का बड़े विवेकपूर्ण ढंग से प्रयोग इन चित्रों में किया गया है। सहज एवं सरल रूपों का प्रयोग करके कलाकृतियों

को पूर्ण किया गया है। अपने मूर्त रूप में गोंड कला फर्श व दिवारों से शुरू हुई और धीरे–धीरे इसने अपना रास्ता कागज व कैनवास पर बना लिया। गोंड कलाकारों के प्रणेता जनगढ़ सिंह श्याम एवं अन्य कलाकार दुर्गाबाई, भज्जू श्याम, नर्मदा प्रसाद, वेंकट रमन सिंह श्याम आदि कलाकारों के नाम मुख्य रूप से सामने आता हैं जिन्होंने इस कला शैली को पोषित किया। इन कलाकारों का विषय–क्षेत्र धार्मिक विश्वास, मिथकों और दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों को चित्रित करना रहा है। केवल उन मिथकों को ही इनका विषय नहीं माना जाता, या केवल वही चीजें जिनका अस्तित्व है वे ही इनका विषय क्षेत्र नहीं हैं, बल्कि स्वप्न व कल्पानाएँ भी इनकी कला के विषय क्षेत्र माने जाते हैं। इस कला के अन्तर्गत प्रत्येक कलाकार का एक निश्चित तरीका या अपनी एक अलग प्रकार की शैली है। इस कला के प्रमुख नमूनों में टैटू बनाना भी विशेष है। इस प्रकार के रूपों से पूरे शरीर पर कलाकृति बनायी जाती हैं। ऐसा माना जाता है कि ये कलाकृतियाँ मृत्यु तक भी व्यक्ति के शरीर पर बनी रहती हैं। ये कलाकार इस कला को दैनिक जीवन के प्रतीकों से जोडते हैं और कल्पनाओं एवं स्मृतियों से भी जोड़कर देखते हैं।

चित्र संख्या–1 चित्र संख्या–2

**चित्रकार– जनगढ़ सिंह श्याम**

गोंड आदिवासी चित्रों में आदिवासी परम्पराओं का समृद्ध स्वरूप दिखाई देता है। इन चित्रों में चित्रकारों ने अपनी परम्पराओं एवं मूल्यों को जीवन्त कर दिया है। आदिवासी समाज के इन चित्रकारों ने वृक्षों, जीव–जन्तुओं और अपने स्थानीय देवों से सम्बंधित अनेक चित्रों का निर्माण किया है जो आदिवासी संस्कृति एवं परम्पराओं का खूबसूरत चित्रण है। चित्रकार जनगण सिंह श्याम, राम सिंह

उर्वीती, दुर्गाबाई, वेंकेटश्याम जैसे वरिष्ठ चित्रकारों की कृतियों में जनजातीय परम्परागत विषयों के रहस्यमय संसार के जीवन्त रूप के दर्शन होते हैं। जनगण कलम के प्रणेता श्री जनगण सिंह श्याम के चित्रों में गोंड स्थानीय देवों जैसे ठाकुरदेव, मरादेव, बघैसुरदेव, सुराही देव, मश्वासी देव, मेड़ो भाई, फुलवारी देवी, मराही देवी, जैसे स्थानीय देवों का चित्रों में सर्वाधिक वर्णन किया है।[4] गोंड आदिवासियों में देवों  का बड़ा महत्व है देवों के अनुष्ठानिक स्थल को देवलोक के नाम से जाना जाता है। इनकी रहस्यमयी कथाओं, गीतों, (यश की गीत) का चित्रण इस तुलिका प्रेमियों द्वारा किया गया हैं गोंड कला आदिवासी समाज की लोककथाओं, गीतों मिथको विश्वास का एक रंगीन लयात्मक अंकन है। आदिवासी सम्प्रदाय के आचार–विचार परम्पराएँ उनके पुरखों द्वारा संजोयी गयी विरासत हैं। विभिन्न लोक नृत्य सैला, करमा, रीना द्वारा तथा विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले गीतों के माध्यम से ये अपनी परम्पराओं का निर्वाहन कर रहे हैं। प्रत्येक नृत्य किसी ना किसी त्यौहार या उत्सव से जुड़ा है। फसल बोते समय और नई फसल के घर अपने पर नृत्य व गायन की अनोखी परम्परा द्वारा अपनी भावनाओं

**चित्र संख्या –3**

**चित्रकार– जनगण सिंह श्याम, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल**

की अभिव्यक्ति गोंड समाज के लोग करते हैं। इन विषयों से सम्बन्धित अनेक सुन्दर चित्रों का निर्माण गोंड चित्रकारों द्वारा किया गया है। गोंड देव लोक के देवों जैसे–गोत्र देवता, क्षेत्रीय देवता, फसलों के देव, पशु और मनुष्य की रक्षा करने वाले देव, बिमारियों से रक्षा करने वाले देव, नदियों–नालों के देवों की उत्पत्ति की अनेक कथाएँ एवं किस्से हैं। जिनमे से अधिकांश का चित्रण इन कलाकारों द्वारा किया गया है बड़ा देव के विभिन्न रूपों को सौन्दर्यात्मक ढंग से चित्रित किया गया है। जो जनगण सिंह श्याम की कलाकृतियों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।[5]

गोंड साम्राज्य की उत्पत्ति की कथाओं एवं धार्मिक पक्ष का चित्रण गोंड चित्रकार राम सिंह उर्वीती के चित्रों में एक रहस्यमयी वातावरण उत्पन्न करता है। गोंड प्रधान चित्रकारों ने कलाकृतियों द्वारा एक

जादुई संसार को साकार बना दिया है। गोंड प्रधान चितेरों के स्मृति लोक में बनी हुई कहानियों को रंगों–रेखाओं और रूपों के माध्यम से चरित्रार्थ कर दिया है। संगीत गान की परम्परा द्वारा अपने पुरखों द्वारा सुनाई गई कहानियों को इन कलाकारों ने अपनी कल्पनाशक्ति के द्वारा जिस रूप में संजोया है वह अद्वितीय है। उन्होने चित्रों के माध्यम से अपनी परम्पराओं को जन–जन के मन तक पहुंचाया है। वरिष्ठ चित्रकार श्री राम सिंह उर्वीती के अपने संस्कृति ओर प्रकृति के प्रति लगाव को अपनी कृतियों में सजीव बना दिया है। वन ओर जीव जन्तु से जुड़ी उनकी आस्थाएँ एवं भावनाएँ उनके चित्रों में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। देवलोक एवं प्रकृति का अद्‌भुत समन्वय चित्रों में दिखाई देता है। प्रकृति से इनकी धार्मिक आस्थाएँ जुड़ी हुई हैं जो चित्रों में बड़े ही सौम्य ढंग से दर्शायी गयी हैं। इनकी रचना वनस्पति देवी, सुख और दुख सौधे दानव एवं मदरीहा में आदिवासी लोकसंस्कृति, परम्पराओं एवं प्रकृति का संगम दृष्टिगोचर होता है। (चित्रकार के साक्षातकार पर आधारित)

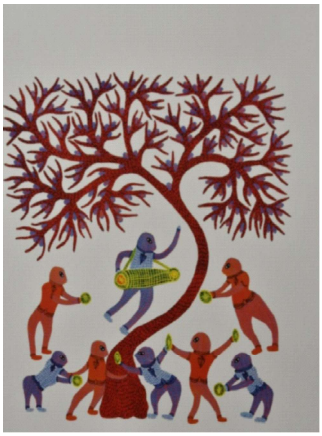

**चित्र संख्या–4**

**चित्र संख्या–5**

**चित्रकार–राम सिंह उर्वीती ओजस आर्ट गैलरी, नई दिल्ली**

गोंड आदिवासी परम्पराओं के सरंक्षक एवं प्रसिद्ध चित्रकार श्री वेंकट रमन सिंह श्याम के चित्रों के विषय पारम्परिक जीवन, काल्पनिक कथाओं, धार्मिक संस्कार से सम्बन्धित रहे हैं। इनका मानना है कि बिना अपने समुदाय, संस्कार व परम्राओं के चित्रण करना सम्भव नहीं है इनके चित्र प्रयोगधर्मी होते हुए भी अपनी जड़ों से पूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं। इनकी कृति **क्रिएशन ऑफ बड़ा देव** में प्रमुख रूप से दिखाई देता है।

गोंड परम्परागत कला की श्रेष्ठतम चित्रकार श्रीमति दुर्गाबाई व्याम के चित्र आदिवासी संस्कृति के मौलिक रूप के दर्शन कराते हैं। बचपन से ही उन्होने आदिवासी संस्कृति का चित्रण दीवारों पर करना शुरू कर दिया था। इन्होंने अपने चित्रों में मुख्य रूप से दादी द्वारा सुनायी हुई कहानियों को सर्वाधिक चित्रित किया है। स्थानीय देवों का रेखाओं ओर चटख रंगो के

**चित्र संख्या–6**

**क्रिएशन ऑफ बड़ा देव, चित्रकार – वेंकट रमन सिंह श्याम**

उचित संयोजन द्वारा चित्रण किया गया है। इन्होनें परम्परागत चित्रों में अपनी अनुठी परम्पराओं के दर्शन कराये हैं। आड़ी–तिरछी रेखाओं द्वारा चित्र में चुम्बकीय आकर्षण उत्पन्न किया गया है जो सहज ही सभी को आकर्षित करता है। ये चित्र इनकी सूक्ष्मतावादी प्रवृत्ति को प्रस्तुत करते है।

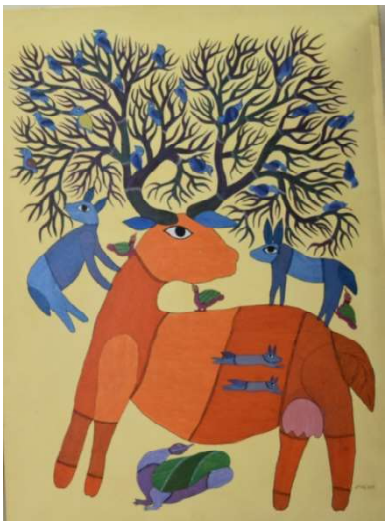

**चित्र संख्या–7**

**चित्रकार– दुर्गाबाई आदिवासी संग्रहालय, भोपाल।**

गोंड कलाकारों द्वारा गढे गये ये रूपाकार उनकी सूक्ष्मता, गम्भीरता एवं विचारवादी प्रवर्षत्ति के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। जिनमें इनकी परम्पराओं का गहराई से चित्रण किया गया है। धार्मिक– अनुष्ठान, विश्वास, देवी–देवताओं, उत्सवों, चन्द्रमा आदि के चित्रों को सौन्दर्यपूर्ण एवं रहस्यात्मक ढंग से उकेरा गया है। देवी–देवताओं के जन्म–मृत्यु, ओर पुर्नजन्म का चित्रण किया गया है जो इन चित्रों की विशेषता रही है। उत्सवो, दैनिक जीवन, पूजा–पाठ, नीति–कथाओं, आख्यानों एवं लोक कथाओं पर आधारित चित्रों का अथाह संसार इन कलाकारों की कूची द्वारा सांस्कृतिक एकता का आभास कराता है। ये चित्र सौन्दर्यात्मक अभिव्यक्ति के साथ मांगलिक भावना, पारस्परिक प्रेम एवं सुख–समृद्धि के भाव से गढे गये हैं। ये चित्र जनजातीय समाज की स्वभाविक अभिव्यक्ति से उपजे सहज, सरल, अनगढ़ रूपाकार है जो धार्मिक प्रवृत्ति की उपज है।

ईश्वरीय सत्ता एवं प्राकृतिक शक्तियों को ये धार्मिक दृष्टिकोण से जोड़कर देखते है। किसी भी प्रकार की प्राकृतिक आपदा को दूर करने के लिए धार्मिक अनुष्ठान में विश्वास करते हैं। इससे सम्बन्धित परम्परागत लोक कथाएँ इन गोंड आदिवासी लोगों में प्रचलित है। जिससे सम्बंधित चित्र भी इन कलाकारों द्वारा सृजित किये गये हैं। ईश्वरीय सत्ता एवं उसका प्रभुत्व इनके जीवन का अटूट अंग है। जिससे ये स्वयं को अलग नहीं कर सकते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षण हर्ष हो या दुख, ईश्वरीय पराशक्ति का वर्चस्व भी इनकी रचनाकृतियों में देखा जा सकता है। जो धर्म के प्रति इनके अथाह प्रेम को प्रकट करता है। ईश्वर द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति, सरंक्षण व संहार सभी का चित्रण इनके चित्रों में दिखाई देता है। गोंड लोक गीतों में बाणा नामक वाद्य यन्त्र बजाकर देवी–देवताओं को किस प्रकार प्रसन्न किया जाता है। उन लोक गीतो, मल्हार का चित्रण भी इन लोक चितेरो ने बड़े ही स्वभाविक एवं आत्मीय ढंग से किया है।[6]

गोंड लोगो मे देवी–देवताओं की पूजा की बड़ी मान्यता है। आरम्भिक गोंड चित्रों में चित्रकार जनगण सिंह श्याम, नर्मदा प्रसाद तेकाम, दुर्गाबाई जैसे वरिष्ठ चित्रकारों ने इन देवी–देवताओं का बहुत अधिक चित्रण किया है। धार्मिक विश्वास और पराशक्ति को बड़े ही सहज, अनगढ़, व भोलेपन के साथ चित्रित किया है। नदी, पेड–पौधों, पशु–पक्षियों का चित्रण मंगल भावना से परिपूर्ण है। धार्मिक प्रवृत्ति की भावना से ओत–प्रोत इन चित्राकृतियों में नदी, धरती, और पेड़–पौधों को अत्यन्त पूजनीय माना गया है। नर्मदा नदी को गोंड लोगों में माँ के समान पूज्य माना है और उसकी पूजा का विशेष महत्व है। गोंड तुलिका प्रेमियों ने मातृतुल्य नर्मदा नदी का चित्रण बहुतायत से किया है। गोंड कलाकृतियों में आदिवासी समुदाय के देवी–देवताओं को जिस रूप में प्रस्तुत किया गया है। उसमें गहरी रचनाशीलता का प्रस्फुटन दिखाई देता है।

## उपसंहार

इस आदिवासी समाज ने देवलोक के चित्रण को अत्यन्त आत्मीय भावनाओं द्वारा चित्रपटल पर उकेरा गया है। जो अद्‌भुत एवं अद्वितीय है। इन कलाकारों ने अपनी स्मृति पर आधारित कथाओं को जिस प्रकार तुलिका, रंग व रेखाओं के माध्यम से दर्शाया है। वह इनका अपने धर्म, विश्वास, आस्था, और भाव का सच्चा स्वरूप प्रस्तुत करता है। कलाकार ने कलाकृतियाँ को जिस भावना से एक एक मोती के रूप में संजोया है। वह वास्तव में दर्शकों को उस अस्तित्व का अनुभव केवल अपने रहस्यमयी चित्रों

द्वारा कर देती है। गोंड सम्प्रदाय के इन चितेरों ने अपनी परम्पराओं को चित्रपटल पर उतारकर अमर कर दिया है।

## सन्दर्भ ग्रंथ


1. रानी, डॉ0 अर्चना, *कला संस्कृति एवं समाज,* प्रकाशक, ड्राइंग एण्ड पेंटिग्स विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पी0जी0) कॉलेज, मेरठ, 2016 पृ **61, 63**
2. चतुर्वेदी, डॉ0 मंजुला, भारतीय लोक कला के अभिप्राय कला प्रकाशन न्यू साकेत कालोनी, बी0एच0यू0 वाराणसी प्रथम संस्करण 2009 पृ **18.20**
3. पारे, डॉ0 धर्मेन्द्र : गोंड देवलोक, *आदिवासी लोकला एवं तुलसी* साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश, संस्कर्षति परिषद् 2008, पृ—**136, 137**
4. दास, ओरोगीता : *जनगढ़ सिंह श्याम द एनचेन्टिड फोरेस्ट* पेंटिग्स एण्ड ड्रांइग्स फ्रॉम द क्राइटस कलेक्शन, रोली बुक, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली 2017
5. पाण्डेय, वन्दना : *सम्पदा मध्यप्रदेश की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य* चर्तुथ संस्करण, 2018 पृ — **343, 344.**
6. पारे, डॉ0 धर्मेन्द्र : गोंड देवलोक, *आदिवासी लोककला एवं तुलसी* साहित्य अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्, भोपाल मध्यप्रदेश 2008।
7. पाण्डेय, वन्दना : *सम्पदा मध्यप्रदेश की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य,* आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी, मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल (म0प्र0) चर्तुथ संस्करण 2018.
8. रानी, डॉ0 अर्चना *समकालीन कला : विविध परिदृश्य,* प्रकाशन ड्राइंग एवं पेंटिग विभाग, रघुनाथ गर्ल्स (पी0जी0) कॉलेज, मेरठ, 2012
9. एल्विन, बेरियर : *एक गोंड गाँव में जीवन,* दिल्ली— नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2007.
10. कला दीर्घा, छमाही पत्रिका, अप्रैल 2007, अंक 14
11. सिंह, डॉ0 ब्रिजेश कुमार : *गोंड जनजाति में सांस्कृतिक परिवर्तन,* वाराणसी— भारती प्रकाशन, 2011
12. दास, ओरोगीता : जनगढ़ सिंह श्याम द एनचेन्टिड फोरेस्ट पेंटिग्स एण्ड ड्रांइग्स फ्रॉम द क्राइटस कलेक्शन, रोली बुक, ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली 2017